देव संस्कृति विश्वविद्यालय - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्राच्य अध्ययन विभाग में

पी-एच. डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध की

प्रस्तावित रूपरेखा

❖ विषय ❖

आचार्य श्रीराम शर्मा के साहित्य में संवेदना के विविध आयाम

निर्देशक

शोध छात्रा

अनीता वाजपेयी

एम.ए. (हिन्दी)

२००५

आचार्य श्रीराम शर्मा के साहित्य में संवेदना के विविध आयाम

अध्याय १. विषय प्रवेश

अध्याय २. सृष्टि संवेदना

अध्याय ३. वृक्ष-वनस्पतियों में संवेदना

अध्याय ४. पशु-पक्षियों में संवेदना

अध्याय ५. मानवीय संवेदना के विविध रूप

अध्याय ६. अतीन्द्रिय संवेदना

अध्याय ७. आध्यात्मिक संवेदना

अध्याय ८. उपसंहार

विषय सूची

१.	शोध अध्ययन का महत्त्व	१-४
	(Significance of Research Study)	
२.	साहित्य सर्वेक्षण	४
	(Literature Review)	
३.	शोध की समस्या	४
	(Problem of Research)	
४.	शोध समस्या का औचित्य	४
	(Justification of Research Problem)	
५.	शोध के उद्देश्य	५
	(Objectives of Research)	
६.	परिकल्पना	५-६
	(Hypothesis)	
७.	शोध विधि	६
	(Research Methodology)	
८.	प्रस्तावित शोध कार्य की योजना	६-८
	(Plan of Proposed Research Work)	
९.	सहायक ग्रन्थ सूची	९-१५
	(Bibliography)	

आचार्य श्रीराम शर्मा के साहित्य में संवेदना के विविध आयाम

१. शोध अध्ययन का महत्त्व :

(Significance of Research study)

संवेदना अहसास या अनुभव की वह क्षमता है जो मनुष्य को विषयवस्तु का बोध कराती है। इस प्रकार संवेदना ज्ञान का स्रोत है। यह संवेदना मात्र मनुष्य की ही विशेषता नहीं है। जीवन में, सृष्टि में जहाँ भी जीवन्तता है, हलचल है, गतिशीलता है, संवेदना किसी अंशों में अवश्य विद्यमान है। संवेदना की स्थूलता या सूक्ष्मता के अनुरूप ही अनुभव की मंदता एवं तीव्रता का निर्धारण होता है। अत: उसी अनुपात में बोध की या ज्ञान की मात्रा का स्वरूप बनता है। इसी के अनुसार वृक्ष-वनस्पतियों से लेकर पशु-पक्षियों एवं मनुष्य से लेकर मनुष्येत्तर प्राणियों में संवेदना के विविध स्वरूप दृश्यमान होते हैं। वस्तुत: संवेदना के इन विविध स्तरों को विकास की प्रक्रिया के तहत भी समझा जा सकता है, जो सृष्टि के मूल में संवेदना के शाश्वत सत्य का प्रतिपादन करती हैं।

वास्तव में सृष्टि की उत्पत्ति ही स्रष्टा को सृष्टि संवेदना से हुई। 'एक अव्यय, निर्विकार, अजर-अमर परमात्मा की एक से अधिक हो जाने की इच्छा हुई। उनका 'एकोऽहं बहुस्यामि' की इच्छा ही शक्ति बन गई।'[१] ब्रह्म की एक से अधिक हो जाने की क्रीड़ा-कल्लोल करने की यह इच्छा ही संवेदना की आदि स्फुरणा बनीं।[२] स्रष्टा की इस सृष्टि संवेदना का मूलरूप आनन्दमय है और 'इस आनन्द से ही सब जीव उत्पन्न होते हैं, विकास पाते हैं और अन्तत: आनन्द में ही लीन हो जाते हैं। 'आनन्दरूपममृतं यद्विभाति' कहते हुए ऋषि सृष्टि के इसी आनन्दस्वरूप का वर्णन करते हैं।'[३]

सृष्टि संवेदना की यह चेतना जड़ प्रकृति की एक 'ऋत्' के अंतर्गत गतिशील रखती है। इसका प्राथमिक परिचय वृक्ष-वनस्पतियों के रूप में होता है। वृक्ष-वनस्पतियों में भी संवेदना है। जगदीशचन्द्र बोस ने सर्वप्रथम इस रहस्य को अनावृत्त किया था। पशु-पक्षियों को सृष्टि संवेदना के विकास का अगला चरण कहा जा सकता है। पशु-पक्षियों की चित्र-विचित्र भाषा, व्यवहार एवं जीवनशैली के सूक्ष्म

---

१. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य - गायत्री महाविज्ञान, पृ. ३

२. आचार्य श्रीराम शर्मा - गायत्री की २४ शक्तिधाराएँ, पृ. ५

३. आचार्य श्रीराम शर्मा - आनन्दरूपममृतं यद्विभति, अखण्ड ज्योति, वर्ष ४५, अंक ९, पृ. १

निरीक्षण करने पर इनके विविध स्वरूप वाले संवेदन जगत् का परिदृश्य स्पष्ट होता है और कुछ पक्षों में तो ये मनुष्य से भी श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं।

संवेदना के विकास की अगली कड़ी मानवीय संवेदना है। बुद्धि एवं भावना के विविध स्तरों के अनुरूप इसके कई स्वरूप हो सकते हैं। समस्त मानवीय गुण इसी संवेदना से उद्भू त होते हैं। जीवन में कला, सृजन, मानवीय सम्बन्ध, प्रेम, सहानुभूति आदि विविध रूप इसी की बहुरंगी छटा दर्शाते हैं।

मानवीय संवेदना के परिष्कार एवं विस्तार के साथ अतीन्द्रिय संवेदना का विकास होता था। बिना आँखों के देखना, बिना कान के सुनना, बिना इन्द्रियों के स्पर्श चेतना इसकी विशेषताएँ हैं। दूरदर्शन, दूरश्रवण, पूर्वाभास, टेलीपैथी जैसे शक्तियों का सहज रूप से विकास होता है।

मानवीय संवेदना के विकास का चरम है-आध्यात्मिक संवेदना इसमें जहाँ संवेदना के उपरोक्त वर्णित स्वरूप स्वत: ही समा जाते हैं, वहीं इसमें अनुभव की समग्रता के कारण, संवेदना की पूर्णता बुद्धत्व के रूप में प्रकट होती है। बुद्धत्व को प्राप्त ऐसा व्यक्तित्व करुणा, प्रेम एवं भक्ति से ओतप्रोत होता है।

आचार्य श्री का जीवन संवेदना के शिखर को प्राप्त ऐसा ही एक करुणाशील व्यक्ति का विग्रह था। आचार्य जी यह कहते नहीं अघाते थे कि 'हमने जीवन में एक ही उपार्जन किया है-प्रेम। एक ही सम्पदा कमाई है-प्रेम, एक ही रस हमने चखा है और वह है-प्रेम।'[४] प्यार, प्यार, प्यार-यही हमारा मंत्र है। आत्मीयता, ममता, स्नेह और श्रद्धा, यही हमारी उपासना है।[५]

संवेदना के चरमशिखर को उपलब्ध आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के उपरोक्त वर्णित सभी स्वरूपों का सांगोपांग विवेचन मिलता है। इनके साहित्य में सृष्टि संवेदना से लेकर वृक्ष-वनस्पति एवं पशु-पक्षी तथा मानवीय संवेदना से लेकर आध्यात्मिक संवेदना के दिग्दर्शन होते हैं। इसमें एक ओर जहाँ संवेदना के विकास क्रम को दर्शाते हुए गहरी अंतर्दृष्टि का विकास होता है, वहीं दूसरी ओर समूची प्रकृति, जगत् एवं जीवन में संवेदना प्रधान श्रेष्ठता एवं दिव्यता के दर्शन होते हैं, जो सहज ही पाठक को सत्यं, शिवं, सुन्दरं के आनन्ददायी अहसास से भर देती है।

वर्तमान समय में आचार्य जी के संवेदना से ओतप्रोत ऐसे साहित्य शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्ता स्वत: ही प्रकट होती है।

---

४. आचार्य श्रीराम शर्मा - विदाई की घड़ियाँ हमारी व्यथा-वेदना, अखण्ड ज्योति, जन. १९६९, पृ. ६५
५. आचार्य श्रीराम शर्मा - विदाई की घड़ियाँ हमारी व्यथा-वेदना, अखण्ड ज्योति, फर. १९६९, पृ. ६५

संवेदना के विकास के विविध मानदण्ड विगत शताब्दी में निर्धारित हुए। बौद्धिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के एकाकी युग में आइ.क्यू को प्रधानता मिली। किन्तु कोरे बुद्धिवाद ने जहाँ मनुष्य को भौतिक रूप से समृद्ध बनाया, वहीं उसको भावनाशून्य मशीनी यंत्र में तबदील कर दिया। आइ-क्यू की इस एकांगिकता को २०वीं सदी के अंतिम दशक में इ-क्यू की भावप्रवणता ने पूरा किया। इसी प्रकार अतीन्द्रिय संवेदनाओं के विकास का महत्त्व वैज्ञानिकों ने स्वीकारा जो अभी परामनोविज्ञान के रूप में ई.एस.पी.[६] के रूप में शोध अध्ययन के तहत चल रहा है। संवेदना के विकास की पूर्णता को वैज्ञानिक एवं मनीषी एस-क्यू के तहत देख रहे हैं। इस प्रकार युग के मनीषी, वैज्ञानिक एवं विचारक मानव जाति को विज्ञान से उपजे वर्तमान संकट से उबारने व उसके भौतिक प्रगति एवं आंतरिक विकास के साथ सर्वांगीण उत्कर्ष को सुनिश्चित करने के लिए संवेदना के उत्तरोत्तर परिष्कार एवं विकास को ही एकमात्र आधार मान रहे हैं।

प्रज्ञा के शिखर पर प्रतिष्ठित युगऋषि इस तथ्य से पूर्व में ही अवगत थे। अत: वे विगत शताब्दी के ९० के दशक में ही 'सतयुग की वापसी' पुस्तक के तहत स्पष्ट कर गये कि भाव संवेदना में विषाक्तता का घुल जाना, उस क्षेत्र में विकृतियों का जखीरा जम जाना ही एकमात्र ऐसा कारण है, जिसके रहते समृद्धि और चतुरता का विकास, विस्तार होते हुए भी उल्टी सर्वतोमुखी विपन्नता ही हाथ लग रही है। सुधार तलहटी का करना पड़ेगा। सड़ी-कीचड़ के ऊपर तैरने वाला पानी भी अपेय होता है। दुर्भावनाओं के रहते दुर्बुद्धि ही पनपेगी और उसके आधार पर दुर्गति के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगेगा नहीं।[८] 'अत: इक्कीसवीं सदी के साथ जुड़े उज्ज्वल भविष्य का यदि कोई सुनिश्चित आधार है तो वह एक ही है कि जन-जन की भाव-संवेदनाओं को उत्कृष्ट, आदर्श एवं उदात्त बनाया जाये।'[९] 'इक्कीसवीं सदी भाव-संवेदनाओं के उभरने-उभारने की अवधि है। हमें इस उपेक्षित क्षेत्र को ही हरा-भरा बनाने में निष्ठावान् माली की भूमिका निभानी चाहिए। यह विश्व उद्यान इसी आधार पर हरा-भरा, फला-फूला एवं सुषमा सम्पन्न बन सकेगा।'[१०]

---

६. J.B. Rhini - New Frontiers of Mind
- Lyol Watson - Super Nature
- J. Mashlov - Roots of Consciousness

७. Danah Zohar & E. Marshal - Spiritual Capital

८. आचार्य श्रीराम शर्मा - सतयुग की वापसी, पृ. १६

९. वही, पृ. २६

१०. वही, पृ. २८

आचार्य श्री द्वारा की गई इन भविष्य कथनों एवं वैज्ञानिकों द्वारा चल रहे शोध-निष्कर्षों के उपरोक्त तथ्यों के आधार पर **'आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के अध्ययन'** सम्बन्धी शोध कार्य का महत्त्व स्वत: ही प्रमाणित होता है।

२. साहित्य सर्वेक्षण

(Literature Review)

आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के विविध आयामों से सम्बन्धित प्रचुर सामग्री भरी पड़ी है। आवश्यकता इसके शोध-अध्ययन एवं संकलन की है। इस संदर्भ में अभी तक कोई समग्र कार्य नहीं हुआ है। इसके कुछ पहलुओं पर जो कार्य हुआ है, वह इस तरह से है।

प्रज्ञा-पुरुष का समग्र दर्शन-डॉ. मंदाकिनी शर्मा, युग ऋषि के साहित्य में नारी संवेदना-डॉ. वर्षा वानखेड़े, आचार्य श्री के दर्शन में उपासना, साधना और आराधना-डॉ. गोविन्द प्रसाद मिश्रा। किन्तु इनमें आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के किसी एक पहलू का वर्णन हुआ है। संवेदना के समग्र स्वरूप पर कार्य अभी तक नहीं हुआ है।

३. शोध की समस्या

(Problem of Research)

'आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के विविध आयाम' :

इसके अंतर्गत संवेदना के विविध आयाम मूलत: तीन बिन्दुओं में सिमटते हैं-१. मनुष्येत्तर जीवन में संवेदना की प्रारम्भिक अवस्था का अध्ययन, २. मानवीय संवेदना के रूप में इसके विकसित स्वरूप की विवेचना एवं ३. संवेदना की अतिमानवीय या आध्यात्मिक अवस्था का अध्ययन एवं विवेचन।

४. शोध समस्या का औचित्य

(Justification of Research Problem)

संवेदना पर उपलब्ध साहित्य के गहन अवलोकन एवं शोध समस्या के महत्त्व के विविध पहलुओं के विवेचन से इस शोध समस्या के पूर्णतया मौलिक व औचित्यपूर्ण होने की सम्भावना बनती है। इस पर किये जाने वाले अनुसंधान से हिन्दी साहित्य में सर्वथा नवीन आयाम का विकास होगा।

५. शोध के उद्देश्य (Objectives of Research)

वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के समग्र स्वरूप को इसके विविध आयामों सहित विवेचित करना है एवं युग समस्याओं के समाधान में इसकी भूमिका को तय करना है। इन उद्देश्यों को निम्न बिन्दुओं में रेखाँकित किया जा सकता है-

१. आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के मूल स्रोत सृष्टि संवेदना के उद्‌भव, विकास प्रक्रिया एवं स्वरूप का विवेचन।

२. आचार्य श्री के साहित्य में वृक्ष-वनस्पतियों में संवेदना के स्वरूप का अध्ययन-विश्लेषण।

३. आचार्य श्री के साहित्य में पशु-पक्षियों में निहित संवेदना के स्वरूप का विवेचन।

४. आचार्य श्री के साहित्य में मानवीय संवेदना के विविध आयामों का विवेचन-विश्लेषण।

५. आचार्य श्री के साहित्य में अतीन्द्रिय संवेदना के विभिन्न स्वरूपों का विवेचन

६. आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के चरम विकसित स्वरूप अर्थात् आध्यात्मिक संवेदना (प्रेम, भक्ति, करुणा) का विवेचन-व्याख्या।

७. वर्तमान समस्याओं के समाधान के रूप में संवेदना के महत्त्व का विवेचन।

६. परिकल्पना (Hypothesis)

साहित्यकार का व्यक्तित्व एवं चिंतन चेतना सहज ही उसके साहित्य के माध्यम से प्रतिबिम्बित होता है। आचार्य श्री का जीवन संवेदना प्रधान रहा। संत, सुधारक, सिद्ध, महायोगी, दार्शनिक, महामनीषी, संगठनकर्त्ता, लेखक, वक्ता आदि बहुआयामी व्यक्तित्वों को स्वयं में समेटे आचार्य श्री ने अपना परिचय पहचान-संवेदना से ओतप्रोत एक इंसान माना। अपने जीवन का एकमात्र उपार्जन, सर्वोच्च साधना एवं सिद्धि वे प्रेम को ही मानते रहे और यह बात कोरे कागज तक सिमटी नहीं है, उनकी संवेदना के धागे में गुँथा विराट् गायत्री परिवार इसका प्रत्यक्ष गवाह है। संवेदना के सभी आयाम उनके जीवन में बड़ी सघनता एवं प्रखरता से प्रकट होते हैं। मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण वे इसी आधार पर करते हैं।

इस आधार पर शोधार्थी की यह परिकल्पना है कि आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना की जो अभिव्यक्ति हुई है यह उनके व्यक्तित्व की तरह समग्र एवं सर्वांगीण है, जिसमें अस्तित्व का कोई भी

पहलू अछूता नहीं है। जड़-चेतन, वृक्ष-वनस्पति, पशु-पक्षी, मनुष्य सभी में संवेदना का विस्तार यहाँ उपलब्ध है।

७. शोध विधि (Research Methodology)

प्रस्तावित शोध अध्ययन का प्रमुख कार्य आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के अध्ययन को लेकर है। अत: शोध अध्ययन के अन्तर्गत आचार्य श्री के समस्त साहित्य का गहन एवं व्यापक अवलोकन किया जायेगा और इनमें वर्णित संवेदना के विविध स्वरूप एवं आयामों का विवेचन किया जायेगा।

शोध के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन अखण्ड ज्योति व अन्य मासिक पत्रिकाओं, आचार्य श्री द्वारा रचित मौलिक ग्रंथों, उन पर हुए शोध ग्रंथों के आधार पर किया जाएगा। सामयिक संदर्भ में सामग्री का संकलन पत्र-पत्रिकाओं में प्रदत्त आँकड़ों, घटनाओं एवं प्रकाशित शोध लेखों के आधार पर किया जायेगा।

इस संकलित सामग्री पर शोध तीन चरणों में पूर्ण होगा-१. आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के विविध आयामों पर सामग्री का संचयन, २. सामयिक समस्याओं के संदर्भ में आँकड़ों एवं तथ्यों का संकलन, ३. आचार्य श्री के साहित्य चिंतन के आधार पर युग समस्याओं के समाधान का विश्लेषण-विवेचन।

८. प्रस्तावित शोध कार्य की योजना

(Plan of Proposed Research Work)

अध्याय – १. विषय प्रवेश :

अध्याय – २. सृष्टि संवेदना :

अध्याय – ३. वृक्ष-वनस्पतियों में संवेदना :

अध्याय – ४. पशु-पक्षियों में संवेदना :

अध्याय – ५. मानवीय संवेदना के विविध रूप :

अध्याय – ६. अतीन्द्रिय संवेदना :

अध्याय – ७. आध्यात्मिक संवेदना :

अध्याय – ८. उपसंहार :

शोधार्थी का विश्वास है कि प्रस्तावित शोध कार्य की समूची योजना अपनी सम्पूर्ण दृष्टि के कारण शोध कार्य के सार्थक स्वरूप को अभिव्यक्ति देगी।

सहायक ग्रंथ सूची

आचार्य श्रीराम शर्मा के प्रकाशित ग्रन्थ

अ. आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक ग्रंथ

ऋग्वेद–चार खण्ड	१९९१
अथर्ववेद–दो खण्ड	१९९१
यजुर्वेद	१९९१
सामवेद	१९९१
१०८ उपनिषद् साधना खण्ड	१९९२
१०८ उपनिषद् ज्ञानखण्ड	१९९२
१०८ उपनिषद् ब्रह्म विद्या	१९९२
सांख्य दर्शन	१९९२
योग दर्शन	१९९२
वैशेषिक दर्शन	१९९२
न्याय दर्शन	१९९२
मीमांसा दर्शन	१९९२
गायत्री महाविज्ञान–तीन खण्ड	१९९०
गायत्री की प्रचण्ड ऊर्जा	१९७९
गायत्री का वैज्ञानिक आधार	१९९०
गायत्री उपनिषद्	१९५८
गायत्री का ज्ञान, विज्ञान और साधना	१९५८
गायत्री की चौबीस शक्ति धाराएँ	१९५८
गायत्री का तत्त्वज्ञान एवं प्रेरणाएँ	१९८१
मैं क्या हूँ ?	
उद्धेरदात्मनात्मानम्	१९९२
आत्मा वाऽरे ज्ञातव्य:	१९७९
पातंजलि योग की तत्त्व साधना	१९९१
ज्ञानयोग की साधना	१९६७
कर्मयोग की रीति–नीति	१९६७
भक्तियोग का वास्तविक स्वरूप	१९६७
योग और तप का तत्त्वज्ञान	१९८१
अग्निहोत्र की गरिमा और महत्ता	१९८१
पंचकोश अनावरण की फलश्रुति, प्रसुप्ति का जागरण	१९८१
अध्यात्म अर्थात् उत्कृष्ट चिन्तन, आदर्श कर्त्तव्य	१९८१
अवतार का प्रयोजन और स्वरूप	१९८१
धर्म का तत्त्वदर्शन	१९८१
कर्त्तव्यनिष्ठा ही सच्ची धार्मिकता	१९८१
सृष्टा की अवतरण प्रक्रिया	१९८१
आनन्द की गंगोत्री अपने अन्तराल में	१९८१
ईश्वर प्रेम अर्थात् सद्भावना युक्त संवेदना	१९८१
ओजस्, तेजस् और वर्चस् के जागरण की साधना	१९८१
जीवन और मरण का अन्योन्याश्रित गति चक्र	१९८१
धर्म दर्शन के चार मूलभूत सिद्धान्त	१९८१
ईश्वर ज्वाला है आत्मा चिन्गारी	१९८१
आत्म विकास का राजमार्ग	१९८१
जो सत्य है वही शिव है, वही सुन्दर है	१९८१
आन्तरिक कायाकल्प का सुनिश्चित विधान	१९८१
सूक्ष्म शरीर की दिव्य विभूतियों का जागरण–उन्नयन	१९८३
सृष्टा का अस्तित्व कण–कण से प्रमाणित	१९८३
विराट् ब्रह्म की झरोखे से झाँकी	१९८५
अध्यात्म क्या था, क्या हो गया, क्या होना चाहिए ?	१९८५
न ही ज्ञान न सदृश पवित्र मिह विद्यते	१९९१
ईश्वर और उसकी प्राप्ति	१९८६
उपासना का तत्त्वदर्शन और स्वरूप	१९६४
मन की तुष्टि आत्मा की दुर्गति	१९८०
आत्मा की पुकार अनसुनी न करें	१९६७
अपूर्णता से पूर्णता की ओर	१९६७
प्रेम ही परमेश्वर है	१९६७
अज्ञान के बंधन काटें, उन्मुक्त जीवन जिएँ	१९७१-७२
अमृत–पारस–कल्पवृक्ष की प्राप्ति	१९७१-७२
उपासना के तीन चरण जप, तप और ध्यान	
आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता	१९७५
प्रभु समर्पित जीवन	१९७७
अंतरंग जीवन का देवासुर संग्राम	१९७७
विद्या याऽमृतभश्नुते	१९७७
ईश्वर और उसकी अनुभूति	१९७७
जीवन की सर्वोपरि आवश्यकता–आत्मज्ञान	१९७१-७२
भव बंधनों से मुक्त हों	१९७१-७२
नियामक सत्ता और उसकी विधि–व्यवस्था	१९८५
आत्मा और परमात्मा का मिलन–संयोग	१९७१-७२
अध्यातमवाद ही क्यों ?	१९७२
आत्मोत्कर्ष का साधना मार्ग	१९७६
स्वर्ग और नरक की अनुभूति कर्मफल के रूप में	१९८१
चेतना का सहज स्वभाव : स्नेह, सहयोग	१९७८
कुण्डलिनी महाशक्ति और उसकी संसिद्धि	१९७८
उत्कृष्टतावादी दर्शन ही भोगवाद का अन्त करेगा	१९८१
तपश्चर्या का तत्त्व दर्शन	१९८१
जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्त्विक प्रकाश	१९४२
यम, नियम	१९९०
आसन और प्राणायाम	१९९०
प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि	१९९०

(आ) वैज्ञानिक अध्यात्मपरक ग्रन्थ

अध्यात्म ऊर्जा की प्रकटीकरण की साधना	१९८१

दृश्य जगत के अदृश्य संचालन सूत्र १९७८
ईश्वर कौन है ? कहाँ है ? कैसा है ? १९७८
चेतना की प्रचण्ड क्षमता एक दर्शन १९७८
अतीन्द्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि १९७८
जड़ के भीतर विवेकवान चेतना १९७८
क्या धर्म अफीम की गोली है ? १९७८
विज्ञान को शैतान बनने से रोकें १९७८
तात्त्विक दृष्टि से बंधन मुक्ति १९७८
धर्म का तत्त्व दर्शन १९८१
धर्मधारणा :मानवीय चेतना की अनिवार्य आवश्यकता १९८१
अध्यात्मवादी मन:शास्त्र की उपयोगिता समझी जाये १९८१
आस्तिकता की दार्शनिक और वैज्ञानिक पृष्ठभूमि १९८१
अतीन्द्रिय सामर्थ्य--संयोग नहीं तथ्य १९८५
विवाद से परे ईश्वर का अस्तित्व १९७८
समस्त समस्याओं का समाधान अध्यात्म १९७७
आत्मशक्ति से युगशक्ति का उद्‌भव १९७७
जीवन साधना प्रयोग और सिद्धियाँ १९७७
दिव्य शक्तियों का उद्‌भव प्राण शक्ति से १९७८
दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ १९७८
अध्यात्म की आधारशिला मन की स्वच्छता १९८८
सुव्यवस्थित जीवन अध्यात्म का प्रथम चरण १९८१
प्रत्यक्ष से भी अति समर्थ-परोक्ष १९८१
विक्षुब्ध मन:स्थिति और प्रेतयोनि १९८१
अदृश्य जगत का सर्वेक्षण सपनों की खिड़कियों से १९८५
अंतरंग और बहिरंग के परिष्कार की साधना १९८१
धर्म का मर्म है-नीतिमत्ता १९८१

(इ) समाजपरक ग्रन्थ

वसुधैव कुटुम्बकम् का स्वप्न साकार होकर रहेगा १९८१
राष्ट्र का भावनात्मक नवनिर्माण ऐसे संभव होगा १९८१
आध्यात्मिकता व्यवहार में उतारें १९८१
परमार्थ में ही स्वार्थ भी १९७२
सेवा धर्म और उसका स्वरूप १९७७
उत्कृष्ट जीवन की कलाकारिता १९७७
मन:स्थितियों से परिस्थितियों का निर्माण १९७७
दुराग्रह छोड़ें, तथ्य अपनायें १९७७
दु:खों के कारण और उनके निवारण १९७७
अध्यात्मपरक शिक्षा के मूलभूत आधार १९८१
एक नाव में बैठे हम सब १९८१
एक ही समस्या, एक ही समाधान १९८१
जिन्दगी एक कला, एक खेल १९८१
भोग में योग

(ई) अन्य ग्रन्थ

हमारी वसीयत और विरासत १९८६
सतयुग की वापसी १९९१
परिवर्तन के महान् क्षण १९९०
ध्वंस के बिना सृजन कैसे ? १९८१
सत्य को पूर्वाग्रहों में न बाँधें १९७९
व्यक्तित्व के परिष्कार में श्रद्धा ही समर्थ १९७९
प्रज्ञा का स्वरूप और क्रियाकलाप १९७९
वातावरण के परिवर्तन का आध्यात्मिक प्रयोग १९७९
मनुष्य की बुद्धि और भावी विनाश १९७९
समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान १९७२
सुनसान के सहचर १९७२
जिन्दगी एक खेल, एक कला १९८८
भाव संवेदनाओं की गंगोत्री १९९०
महामानवों की टकसाल, भारतीय आर्ष परम्परा १९८१
बुद्धि पर धर्म का अंकुश रखा जाय १९८१
समग्र प्रगति की रीति--नीति १९८१
नवयुग की आधारशिला सद्‌भावयुक्त श्रद्धा १९८१
व्यक्तित्व निर्माण के चार स्वर्णिम सूत्र १९८१
प्रजातंत्र का मेरुदण्ड १९८१
इक्कीसवीं सदी के लिए हमें क्या करना होगा ? १९९०
इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण १९८९
इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य १९८९
नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी १९८९
जीव--जन्तु बोलते भी हैं, सोचते भी हैं १९९८
प्रकृति का अनुसरण १९९०
परोक्ष सत्ता एवं उसकी विधि व्यवस्था १९८९
दैवी शक्ति के अनुदान और वरदान १९८९
सृष्टा का परम प्रसाद--प्रखर प्रज्ञा

(उ) वाङ्मय संहितायें

१. युग द्रष्टा का जीवन दर्शन — वाङ्मय खण्ड-१, द्वि० सं० १९९८
२. जीवन देवता की साधना--आराधना — वाङ्मय खण्ड--२
३. साधना पद्धतियों का ज्ञान-विज्ञान — वाङ्मय खण्ड-४
४. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर — वाङ्मय खण्ड--७

५. ईश्वर कौन है ? कहाँ ? कैसा है ? वाङ्मय खण्ड-८
६. गायत्री महाविद्या का तत्त्व दर्शन वाङ्मय खण्ड-९
७. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन वाङ्मय खण्ड-१०
८. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि वाङ्मय खण्ड-१४
९. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क वाङ्मय खण्ड-१८
१०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ वाङ्मय खण्ड-२०
११. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व वाङ्मय खण्ड-२१
१२. चेतना, अचेतन एवं सुपर चेतन मन वाङ्मय खण्ड-२२
१३. विज्ञान एवं अध्यात्म परस्पर पूरक वाङ्मय खण्ड-२३,
१४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म वाङ्मय खण्ड-२४
१५. युग परिवर्तन कैसे और कब ? वाङ्मय खण्ड-२७
१६. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण, भग-१ वाङ्मय खण्ड-२८
१७. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण, भाग-२ वाङ्मय खण्ड-२९
१८. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व वाङ्मय खण्ड-३४
१९. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान वाङ्मय खण्ड-३५
२०. धर्म चक्र प्रवर्तन एवं लोकमानस का शिक्षण वाङ्मय खण्ड-३६
२१. प्रज्ञोपनिषद् वाङ्मय खण्ड-३८
२२. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ वाङ्मय खण्ड-४३
२३. भव्य समाज का अभिनव निर्माण वाङ्मय खण्ड-४६
२४. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी वाङ्मय खण्ड-५२
२५. धर्म तत्त्व का दर्शन एवं मर्म वाङ्मय खण्ड-५३
२६. मनुष्य में देवत्व का उदय वाङ्मय खण्ड-५४
२७. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ वाङ्मय खण्ड-५५
२८. आत्मोत्कर्ष का आधार ज्ञान वाङ्मय खण्ड-५८
२९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा वाङ्मय खण्ड-५९
३०. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नव निर्माण वाङ्मय खण्ड-६३
३१. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे वाङ्मय खण्ड-६५
३२. युग निर्माण योजना दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम वाङ्मय खण्ड-६६

अन्य सहायक ग्रन्थ

१. अरविन्द श्री (अनुवादक केशवदेव आचार्य)- दिव्य जीवन-तीन खण्ड दिव्य जीवन साहित्य प्रकाशन, पाण्डिचेरी,१९७२
२. आत्रेय डॉ. शान्ति प्रकाश- योग मनोविज्ञान द इण्टरनेशनल स्टेण्डर्ड पब्लिकेशन्स, वाराणसी २,१९६५
३. बोरा राजमल, भाव-उद्वेग और संवेदना, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, २३ दरियागंज, नई दिल्ली-२, १९८४
४. ज्योतिर्मयानन्द स्वामी (अनुवादक डॉ.शशिभूषण मिश्र)- रचनात्मक चिन्तन की कला, इण्टरनेशनल योग सोसायटी, लाल बाग, लोनी, गाजियाबाद, उ.प्र. १९६१
५. त्रिपाठी प्रेमवल्लभ- पुरुषार्थ चतुष्टय, राजविद्या ग्रंथमाला, डी. १/७ सरस्वती फाटक, वाराणसी-१
६. दिनकर रामधारी सिंह- चेतना की शिखा, उदयांचल, राजेन्द्र नगर, पटना-१६, १९७३
७. पटवर्धन केशव अनंत ऋषियों के विज्ञान की श्रेष्ठता, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, सूरत, १९५७
८. बर्कले जार्ज (अनुवादक डॉ.प्रकाश श्रीवास्तव)- मानवीय ज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, १९८३
९. बाबा बंगाली कृत, अनु.-कु. बृजरानी देवी, पातंजल योग सूत्र, एन. आर. भार्गव, २ लाइन बम्मार, ईस्ट खड़की पूना ३, १९८४

१०. ब्रेडले एफ.एच. (अनुवादक डॉ. फतह सिंह)- आभास और सत्, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उ.प्र. लखनऊ,१९६४
११. मौरर और हौबर्ट-मनोविकार विज्ञान और धर्म में स्यारन संकट, हरियाणा हिन्दी ग्रंथ अकादमी प्रकाशन-१९७२
१२. राजर्षि रामकृष्ण शर्मा-अष्टांग योग रहस्य, घेरण्ड संहिता, रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार, १९९५
१३. रानाडे रामचन्द्र दत्तात्रेय (अनुवादक रामानन्द तिवारी)- उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, १९८३
१४. रंगानाथनन्द स्वामी- उपनिषदों की वाणी, मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम पुल मेरठ, १९७९
१५. ब्रह्मचारी योगानन्द जी, महायोग विज्ञान, स्वर्गाश्रम ऋषिकेश, सं. १९९४
१६. वाणी श्री मातृ-१५ खण्डों में, श्री अरविन्द सोसायटी पाण्डिचेरी, प्रथम संस्करण-१९८०
१७. विलियम्स सर एम. मॉनियर (अनुवादक डॉ. रामकुमार राय)- भारतीय प्रज्ञा, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी-१, १९६५)
१८. स्वामी महात्मा नारायण - योग रहस्य, वैदिक साहित्य प्रचारिणी सभा, दिल्ली, १९३२
१९. सरस्वती स्वामी अखण्डानन्द - दृग्-दृश्य विवेक, सत्साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट, बम्बई, १९९६
२०. सक्सेना डा. श्रीकृष्ण- भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणी-१, १९६९
२१. सिंह डॉ. शिव प्रसाद - उत्तर योगी, लोक भारतीय प्रकाशन, १५ ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-१९७२
२२. शास्त्री उदयवीर - पातंजल योगदर्शनम्, हिन्दुस्तान एकादमी, इलाहाबाद उ.प्र. - १९९४
२३. शुक्ल लालजीराम - आध्यात्मिक मनोविज्ञान, नन्द किशोर एण्ड संस, पो. बा. नं. १७, वाराणसी
२४. शुक्ला डॉ. लक्ष्मी - भारतीय मनोविज्ञान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल - १९७१

BIBLIOGRAPHY

1. Abhedananda Swami- The Yoga Psychology, Ramakrishana Vedanta Math, Calcutta, 1973
2 Abhedananda Swami- Yoga Its Theory & Practice, Ramakrishana Vedanta Math, Calcutta, 1967
3. Aurobindo Sri, Complete works in 20 vols., Sri Aurobindo Ashram Pondicherry
4. Bailey Alice A - The soul and its Mchanism, Lueis press Ltd. London - 1965
5. Bennett J.G., A Spiritual Psychology, Hodder and Stoughten Ltd. London, 1964
6. Brunton Paul - The Inner Reality, B I Publication, 54 Janapath, New Delhi-1, 1978
7. Burke Richard Mauria - Cosmic consciousness, E P Dulton Ion Inc USA, 1969
8. Buss David M. - the Eolution of desire, Basic Books, 10 East 53rd Street, New York 10022-5299. 1994
9. Campbell Anthony- Seven States of Consciousness, A Vision of Possibility Suggested by the Teaching of Maharshi Mahesh Yogi (Victor Gollanz Ltd;, London, 1980
10. Capra Fritjof- The New Vision of Reality, Bhartiya Vidya Bhavan, Bombay, 1983
11. Carrel Alexin - Man The Unkown, klico Publishing House 33 kope wall lane, Rampart Row, for Mumbai-1, 1974
12. Davis Paul- The Mind of God, Simon and Schuster Building Rockfeller center 1230 Avenue of American, New York 10020, 1992
13. Dennet Daniel C. - Consciousness Explained, Penguin Book Ltd, 27 Klaight lane Loxndon, 1990
14. Dragonetti D. Carmen, Tata F. - The Yoga Sutras of Patanjali, Motilal Banarsidas Publishing Pvt. Ltd. Delhi, 1992
15. Eccles John C.- The Human Psyche, Springer-Xerlag, Journal Promotion, Post Back-1045280, 0-6900 Heidelberg 1, 1980
16. Fortune Dion - Psychie Self Defence, Harpar Collins Publishers 77-85 Fulham palace Road Hommersmith London W6, 8JB, 1988
17. Gibson Sandra - Beyont the Mind, Tower Publication Inc., Two part avenue, New York, 100016, 1981

18. Goel B.S. - Psycho Analysis & Meditation, Third Eye Foundation of India, 1986
19. Goel B.S. - Psycho Analysis & Meditation - Related Essays, Third Eye Foundation of India, 1987
20. Goel B.S. - Third Eye and Kundalini, Third Eye Foundation of India, 1985
21. Hewitt James- The Complete Yoga Book, Rider and Company, 17-21, Conway Street, London, 1983
22. Hook sidney - The Quest for bieng, Pronetheus Books 59, john glemm drivem amgerst, New York
23. Howard vernon - Secret of Mental Music, A Thamen and Co. welling borough Northamptoonshiri, 1983
24. James William- The Varieties of Religious Experiences, Crowell-Collier Publishing Co., 1961
25. Johnson Paul E.- Psychology of Religion, Abingdon Press, Nashville, 2, Tennessee, New York, 1958
26. Jung C. G.- Edited by Violet S. De Laszle, Psyche and Symbol, Doubtleday and Co., Inc. Garden City New York, 1958
27. Kohn Aifier- The Brighter Side of Human Nature Basic Books a Division of Harper Collins Publisher, 1990
28. Koran Al- Bring out the Magic in your mind, A. Thomas and Company, Wellingborough Northampton Shire, 1983
29. Lansdowne Zachany F. - The Chakras and Esoteric Healing, Motilal banarsidas, 41 UA, Bunglow Road, Jawahar Nagar, Delhi -7, 1996
30. Leggett Trevor - Sankara on the Yoga and Consciousness, Y.K. Publishers, 8, Parasuram Nagar, Shahganj, Agra-10, 1987
31. Mahajan S.N.- The Science of Yoga and Consciousness, Y.K.Publishers 8, Parsuram Nagar, Shahganj Agra-10, 1987
32. Mambert W.A. And Foster B.F.- Exploring your Unconscious Mind, Corner Stone Library, Inc., 1230, Ave. of the American New York, Ny 10020, 1977
33. Mumford leoris - The Transformation of Man, Harper and brolhero Publishers 49 east, 33rd Street, New York, 16, 1956
34. Powell Arthur E.,-The Mental Body, I bid., 1975
35. Radhakrishnan S.- Recovery of Faith, Orient Paperbacks, 36 C, Connaught Place, New delhi-1, 1967
36. Rajneesh Bhagwan Shree - Yoga : The Alpha and the Omega, Vol. 1-10, Rajneesh Founation, Shree Rajneesh Ashram Poona 1, 1978
37. Rajneesh Bhagwan Shree - Yoga : The Science of the Soul, Rajneesh International Institute of Yoga, Science and Philosophy of USA, 1977
38. Rama Swami, B. Adolph - Ajaya Swami - Yoga and Psychotherapy of Evolution of Consciousness, The Himalayan International Institute of Yoga Science and Philosopy, Pencilwenia, 1979
39. Ranchan Son P.- An Anotomy of Indian Psyche, Ajanta Publications, 7255/8, Prem Nagar, Shakto Nagar, Delhi-7, 1987
40. Ranganathananda Swami- The Call of Human Excellence, Bhartiya Vidya Bhavan, Bombay 7, 1977
41. Ricker Hans-Wrich- The Yoga of Light, George Allen and Unwin Ltd., Ruskin House, Museum Street, London, 1972
42. Russel bertrand,-An Inquiry into Meaning of Truth, Penguine Books Ltd., Harmonds Worth, Middle sex, 1963
43. Ryle Gilbert- The Concept of Mind, The University of Chicago Press, Chicago, 1984

44. Sachdeva J.P.- Yoga and Depth Psychology, Motilal Banarsidas, kBungalore Road, Jawahar Nagar, Delhi-7, 1978
45. Sachdeva J.P. - Yoga and Depth Psychology, Motilal Banarsidas, Bunglow Road, Jawahar Nagar Delhi-7, 1978
46. Saraswati Swami Styananada- A Systemetic course in the Ancient Tantric Technique of Yoga and Kriya, Bihar School of Yoga, Munger, 1981
47. Saraswati Swami Yogeshwarnanda - Science of Divinity, Yoga Niketan Trust, Rishikesh, 1973
48. Schwarts David J. - The magic of Psyche power, Prentice hall Inc. Engte wood cliffs, New Jersey, USa, 1981
49. Seher Jordan- Theories of the Mind, The Free Press 866 Third Avenue, New York-10022, 1966
50. Sen Indra- Integral Psychology, Sri Aurobindo International Centre of Education Pondicherry, 1986
51. Sethna K. D. -The Spirituality of the Future, Fairleigh Dickinson University Press, London, 1981
52. Shubanarayanan N.- Occult Psychology of the Hindu, Dipti Publications Sri Aurbindo Ashram Pandicherry-2, 1975
53. Singh Dr. Jej- Secrets of Patanjali Yoga, Yoga-Jyotish Ayurved Ashram Nadsa, Khimsepur, Farrukhabad, U.P., 1969
54. Sinha Jadunath- Indian Psychology, Vol. 1-Congnition; vol. II-Emotion and will, vol. III-Epistemology of Perception, Motilal Banarsidas Bangolore Road, Jawahar Nagar, Delhi-7, 1986
55. Sivananda Swami- The Principal Upanishads The Divine Life Society, Shivanandanagar, Tehri Garhwal, U.P. India, 1983
56. Sivananda Swami- Samadhi Yoga, The Divine Life Society, Sivananada Nagar, Tehri Garhwal, U.P. 1983
57. Spence Lewi's- An Encyclopedia of Occultism, The Citadel Press, 120, Enterprise Ave. Secaucus, N.J.D. 7094, 1974
58. Sternberg R.J., Smith E.E.- The Psychology of Human Thought, Cambridge University Press, The Pitt Bulding Truonpington Street, Cambridge, 1988
59. Tiimni I.K. - Glimpses in to the Psychology of yoga, The Theosophical Publishing House Adyar, Madras, 1976
60. Taimni I.K. - The Science of Yoga , The Theosophical Publishing House Adyar, Madras, 1979
61. Tart Charles, editors -Allived States of Consciousness, Horper Collins Publishers, 10 east, 53rd slocel New York-10022, 1990
62. Underhill Evelyn, Mysticism, The New American Library, Inc., 1633 Broadway, New York, Ny-19, 1974
63. Vyas Dr. R.N. - Application of Psychology in the Physical (western) and spiritual (Indian) Domains, Indo vision Pvt. Ltd. II A 220, Neharu Nagar Ghasiabad, 1987
64. Watson Lyall - Dark Nature, Hodder, Headline PLC 338 Euston road London, 1995
65. Woods James H. - The Yoga System of Patanjali, Motilal Banarsidas Publishers Pvt. Ltd, Delhi, 1992
66. Wright Nicolas - Understanding Human Behaviour in 24 Volume, Maedonald Rainliee Inc. 205,west Highland Ave, Milwonkee, Wisconsin 55203, 1977

पत्र-पत्रिकाएँ

१. अखण्ड ज्योति, मासिक, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा-३, १९४० से १९९५ तक
२. प्रज्ञा अभियान मासिक, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा, जनवरी १९८१ से दिसम्बर १९८३ तक
३. प्रज्ञा अभियान पाक्षिक, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार
४. महिला जागृति अभियान मासिक, शान्तिकुंज सप्त सरोवर हरिद्वार, जुलाई १९७५ से सितम्बर १९८० तक
५. युग निर्माण योजना मासिक, १९६७ से १९९५ तक, युग निर्माण योजना पाक्षिक जुलाई १९७१ से अगस्त १९७७ तक, युग निर्माण योजना साप्ताहिक, सितम्बर १९७७ से जनवरी १९८१ युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा
६. युग शक्ति गायत्री मासिक, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि मथुरा
७. श्री अरविन्द कर्मधारा, श्री अरविन्द आश्रम, दिल्ली शाखा, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-१६

Magazine & Journal

1. Bulletin of the Ramakrishana Mission Institute of Culture, Monthly Ramakrishana Mission Institute of Cultutre, Gol Park, Calcutta-29
2. Dharma Marg, Quarterly Ramayan Vidhyapeath, 15, Institutional Area, Lodhi Road, New Delhi-3
3. International Philosophical Quarterly, Fordham University, Bronx, Ny 10458
4. Journal of Indian Council of Philosophical Research Indian Council of Philosophical Research, USO House 6. Spatial Institutional Area, New Mehrauli Road, New Delhi-67
5. Pravudha Bharta or Awakened India, Monthly Advaita Ashram, 5-Dehi Entally Road, Calcutta-14
6. Research for Religion and Parapsychology The International, Association for Religion and Parapsychology, 4-11-7, Inokashira, Mitaka-Shi, Tokyo, Japan-181
7. The Theosophical Research Journal, Quarterly The Theosophical Education and Research Foundation 1926 N, Main St. P.O.Box 270, Wheaton, 12, 60189
8. The Vedanta Kesari, Monthly Sri Ramakrishna Math, Mylapore, Madras-4